उत्तर—'मुक्तियज्ञ' कविवर सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित 'लोकायतन' महाकाव्य का अंश है जिसमें १९२१ ई. से १९४७ ई. के मध्य घटने वाली भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। 'मुक्तियज्ञ' की कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है :

अंग्रेजों ने भारतीयों को परेशान करने के लिए नमक पर कर बढ़ा दिया व नमक कानून बनाया। अंग्रेजों के इस कानून का महात्मा गांधी ने विरोध किया तथा इस कानून को तोड़ने के लिए वे २४ दिनों की यात्रा करके डाण्डी गाँव पहुँचे और वहाँ समुद्र के पास नमक उठाकर 'नमक कानून' भंग किया। कवि ने इसका उल्लेख निम्न पंक्तियों में किया है :

वह प्रसिद्ध डाण्डी यात्रा थी,
जन के राम गए थे फिर वन।
सिन्धु तीर पर लक्ष्य विश्व का,
डाण्डी ग्राम बना बलि प्रांगण॥

Scanned by TapScanner

जनजीवन में चेतना उत्पन्न करने तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों का आह्वान करने के उद्देश्य से गांधी जी ने नमक कानून तोड़ा। वे २४ दिनों की पैदल यात्रा करके 'डाण्डी' ग्राम पहुँचे थे। इसका उल्लेख करते हुए कवि कहता है :

वह चौबीस दिनों का पथ व्रत,
दो सौ मील किए पद पावन।
स्थल-स्थल पर रुक, पा जन-पूजन,
दिया दीप्त सत्याग्रह दर्शन॥

यह घटना 'डाण्डी यात्रा' के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह आन्दोलन सत्य और अहिंसा पर आधारित था, किन्तु अंग्रेजों ने कठोरता से सत्याग्रहियों का दमन किया। देश के अनेक नेताओं के साथ गांधी जी को कारागार में डाल दिया। गांधी जी ने जेल में ही आमरण अनशन कर दिया।

जैसे-जैसे अंग्रेजों का दमन-चक्र बढ़ता गया वैसे-वैसे ही मुक्तियज्ञ तीव्र होता गया। गांधी जी ने भारतीयों को स्वदेशी अपनाने की प्रेरणा दी। इस प्रकार गांधी जी ने भारतीयों में उत्साह एवं जागृति उत्पन्न की। १९२७ ई. में भारत में साइमन कमीशन आया जिसे विरोध के कारण वापस जाना पड़ा।

गांधी जी ने सन् १९४२ ई. में **'अंग्रेजो भारत छोड़ो'** का नारा लगाया सारे देश में क्रान्ति की आग धधक उठी। सभी बड़े नेताओं सहित गांधी जी को उसी रात बन्दी बना लिया गया। अंग्रेजों ने बालकों, स्त्रियों तथा वृद्धों पर अत्याचार आरम्भ कर दिए जिसके विरोध में भारतीयों ने चारों ओर हड़ताल की और तालाबन्दी हो गई। सब कामकाज ठप्प हो गया। पूरे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध हिंसा भड़क उठी थी। गांधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा का जेल में ही स्वर्गवास हो गया। भारतीयों की बढ़ती हिंसा के कारण अंग्रेज भारत छोड़ने के लिए विवश हो गएतथा १५ अगस्त, १९४७ ई. को भारत अंग्रेज छोड़कर चले गए तथा भारत स्वतन्त्र हो गया। देश तो स्वतन्त्र हो गया, लेकिन अंग्रेज जाते-जाते भारत-पाकिस्तान के रूप में देश के दो टुकड़े कर गए। जिससे गांधी जी बहुत दुःखी हुए।

सारा देश स्वतन्त्रता का उत्सव मना रहा था, परन्तु उसी समय नोआखाली में साम्प्रदायिक दंगा हो गया। इस घटना से दुःखी होकर गांधी जी ने उपवास किया। ३० जनवरी, १९४८ ई. को नाथूराम गोडसे ने गांधी जी की गोली मारकर हत्या कर दी।

इस प्रकार इस खण्डकाव्य में गांधी युग का इतिहास अंकित है। यह वह समय था जब सम्पूर्ण भारत में एक हलचल मची हुई थी और देश में क्रान्ति की आग सुलग रही थी। इस प्रकार 'मुक्तियज्ञ' गांधी युग के स्वर्णिम इतिहास का काव्यात्मक आलेख है जिसमें गांधी जी द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता के लिए किए गए आन्दोलनों का उल्लेख होने के साथ-साथ गांधीवाद एवं गांधी दर्शन पर भी प्रकाश डाला गया है। निश्चय ही यह एक प्रेरणादायक काव्य है।

Scanned by TapScanner

(१) **महान जननायक**—गांधी जी सम्पूर्ण भारत में जन-जन के नेता थे। उनका भारतीय जनता के हृदय पर पूर्ण राज्य था। उनके संकेत मात्र पर भारतवासी कुछ भी करने को तैयार रहते थे।

उनके नेतृत्व में भारतीय जनता ने स्वतन्त्रता की लड़ाई जीती। अतः वे एक महान जननायक थे।

लोक प्रगति का देवदूत वह,
तीस कोटि का रहो कृतीजन।
विश्व चमत्कृत सोच रहा था,
क्या भारत की सिद्धि साध्य धन?

(२) **सत्य, अहिंसा और प्रेम के प्रबल समर्थक**—गांधी जी सत्य, अहिंसा तथा प्रेम के पुजारी थे। अपने इन तीन अस्त्रों के बल पर ही उन्होंने अंग्रेजी सरकार की नींव हिला दी। सत्य, अहिंसा का प्रयोग उन्होंने केवल ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध ही नहीं किया अपितु अपने व्यक्तिगत जीवन में भी इन्हें अपनाया :

सत्य अहिंसा से वे करते सविनय युग-जन का संचालन।

(३) **मानवीय गुणों से युक्त**—गांधी जी विभिन्न मानवीय गुणों जैसे—त्याग, करुणा, दया, इन्द्रिय संयम और मानवता के प्रति प्रेम से युक्त थे। उनका मत है कि मानव मन में उत्पन्न घृणा को घृणा से नहीं अपितु प्रेम से नष्ट किया जा सकता है :

घृणा, घृणा से नहीं मरेगी,
बल प्रयोग पशु साधन निर्दय।
हिंसा पर निर्मित भू-संस्कृति,
मानवीय होगी न, मुझे भय॥

(४) **दृढ़ प्रतिज्ञ**—गांधी जी साहसी तथा दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति थे। वे अपने निश्चय पर अटल रहते थे। डाण्डी यात्रा के समय उनके दृढ़ प्रतिज्ञ और साहसी होने के प्रमाण मिलते हैं। उन्होंने नमक कानून तोड़ने की प्रतिज्ञा की तो उसे पूरा कर दिखाया :

प्राण त्याग दूँगा पथ पर ही,
उठा सका मैं यदि न नमक-कर।
लौट न आश्रम में आऊँगा,
जो स्वराज ला सका नहीं घर॥

Scanned by TapScanner

(५) **जातिवाद के विरोधी**—गांधी जी जातिवाद के कट्टर विरोधी थे। जातिवाद समाज को खोखला कर देता है ऐसा उनका मानना था। वे भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद के इस अभिशाप को समाप्त करने के लिए निरन्तर प्रयास करते रहे। वे कहते हैं :

भारत आत्मा एक अखण्डित,
रहते हिन्दुओं में ही हरिजन।
जाति वर्ण अघ पोंछ, चाहते,
वे संयुक्त रहें भू जनगण॥

(६) **समदर्शी**—गांधी जी की दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा या ऊँच-नीच नहीं था वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे। छुआछूत को वे समाज का कलंक मानते थे। उनके दृष्टि में कोई अछूत नहीं था :

छुआछूत का भूत भगाने,
किया व्रती ने दृढ़ आन्दोलन।
हिले द्विजों के रुद्ध हृदय पट,
खुले मन्दिरों के जड़ प्रांगण॥

उन्होंने हरिजनों को गले लगाया तथा ब्राह्मण और शूद्र को एक नजर से देखते हुए सामाजिक समरसता का प्रयास किया।

(७) **लोकपुरुष**—गांधी जी 'मुक्तियज्ञ' में पाठकों के समक्ष लोकपुरुष के रूप में आते हैं। कवि इस सम्बन्ध में कहता है :

संस्कृति के नवीन त्याग की,
मूर्ति, अहिंसा ज्योति सत्यव्रत।
लोक पुरुष स्थितप्रज्ञ, स्नेह धन,
युगनायक निष्काम कर्मरत॥

Scanned by TapScanner